साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 13-19 फरवरी, 2023, वर्ष-8, अंक-44

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

सीएम शिवराज सिंह चौहान ने आहार अनुदान योजना में सिंगल क्लिक से जारी की राशि, बोले

बैगा, भारिया और सहरिया परिवारों को पशुपालन से जोड़ेगी सरकार

-ढाई लाख महिलाओं के खाते में डाले 24 करोड़ 11 लाख 20 हजार

-योजना में परिवारों को दो पशु, भैंस या गाय उपलब्ध कराई जाएगी

भोपाल। जागत गांव हमार

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि बैगा, भारिया और सहरिया परिवारों को पशुपालन गतिविधियों से जोड़ने के लिए राज्य सरकार योजना शुरू कर रही है। योजना में परिवारों को दो पशु, भैंस या गाय उपलब्ध कराई जाएगी, जिसकी 90 प्रतिशत राशि राज्य सरकार वहन करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2017 में विशेष पिछड़ी जनजातियों के लिए आहार अनुदान योजना इस उद्देश्य से आरंभ की गई थी कि महिलाएं अनुदान की राशि अपने परिवार की बेहतरी के लिए खर्च करें। मुझे प्रसन्नता है कि बैगा, भारिया और सहरिया परिवारों की महिलाओं को उपलब्ध कराई जा रही प्रतिमाह एक हजार रुपए की राशि का महिलाओं ने सही तरीके

से उपयोग किया है और इसके परिणाम भी बेहतर आए हैं। मुख्यमंत्री बैगा, भारिया और सहरिया जनजाति की 2 लाख 41 हजार 120 महिलाओं के खाते में 24 करोड़ 11 लाख 20 हजार रुपए की अनुदान राशि सिंगल क्लिक से अंतरित कर वर्चुअल संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने छिंदवाड़ा, उमरिया और श्योपुर की महिलाओं से वर्चुअली संवाद भी किया। मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में प्रमुख सचिव जनजातीय कार्य एवं अनुसूचित जाति कल्याण पल्लवी जैन गोविल और विभागीय अधिकारी उपस्थित थे। मंत्री मीना सिंह उमरिया से वर्चुअली शामिल हुईं।

कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी

मुख्यमंत्री ने कहा कि आहार अनुदान योजना प्रदेश के 15 जिलों में संचालित है। इन जिलों के अलावा अन्य जिलों में रह रही विशेष पिछड़ी जनजाति की महिलाओं को योजना का लाभ दिलाने के प्रयास किए जा रहे हैं। जनजातीय भाई-बहनों की बेहतरी में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। ऐसे परिवार जिनके पास रहने की जगह नहीं है, उन्हें निःशुल्क प्लॉट उपलब्ध कराए जाएंगे और उनके घर बनाने की व्यवस्था भी की जाएगी।

25 प्रजाति के मोटे अनाज को बचाने की कच्चे घर से कर रहीं पहल

पीएम मोदी को भाया डिंडोरी की लहरी बाई का बीज बैंक

लहरी बाई पर हमें गर्व है...लहरी बाई पर गर्व है, जिन्होंने श्री अन्न के प्रति उल्लेखनीय उत्साह दिखाया है। उनके प्रयास कई अन्य लोगों को प्रेरित करेंगे। मिलेट्स उत्पादन में मप्र अभी देश में दूसरे नंबर पर है। पहला नंबर है छत्तीसगढ़ का, छत्तीसगढ़ की सीमा से ही लगा है मप्र का डिंडोरी जिला। ये जिला मोटे अनाज उत्पादन में प्रदेश में पहले नंबर पर है।

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के डिंडोरी जिले में मिलेट्स (मोटा अनाज) का बीज बैंक चलाने वाली लहरी बाई की देशभर में प्रशंसा हो रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी लहरी बाई और उनके बीज बैंक की तारीफ की है। साथ ही लहरी बाई को लोगों की प्रेरणा बताया है। दरअसल, जिले के बैगा चक निवासी 27 वर्षीय बैगा महिला का बीज बैंक पीएम मोदी को भी भा गया है। गौरतलब है कि केंद्रीय बजट में मोटे अनाज को ग्लोबल पहचान दिलाने की पहल के बाद से ही डिंडोरी जिले के बैगाचक निवासी लहरी बाई की चर्चाएं प्रदेश भर में होने के साथ अब प्रधानमंत्री तक पहुंच गई है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भी गत दिनों यह कहकर कि डिंडोरी जिले में मोटे अनाज के प्रसंस्करण को लेकर पहले से ही कार्य चल रहा है। इन चर्चाओं को और बल मिला है। लहरी बाई मोटे अनाज की विलुप्त होती प्रजाति को बचाने के लिए विगत एक दशक से कार्य कर रही हैं। बैगा महिला लहरी बाई ने अपने कच्चे आवास में ही मोटे अनाज की 25 से अधिक विलुप्त प्रजाति के बीज का बैंक तैयार किया है।

कलेक्टर ने बनाया था मुख्य अतिथि

लहरी बाई अपने गांव सहित आसपास के दो दर्जन गांव के किसानों को अनाज के बदले यह बीज उपलब्ध कराती हैं। जिले में मोटे अनाज बोवनी का रकबा और बढ़ाने की तैयारी भी कलेक्टर ने तेज कर दी है। मुख्यमंत्री ने भी इसे विस्तार देने की बात कही है। लहरी बाई को कलेक्टर विकास मिश्रा ने गणतंत्र दिवस के समारोह में मुख्य अतिथि भी बनाया गया था। जिले में यह पहला अवसर था, जब किसी बैगा महिला को गणतंत्र दिवस के समारोह में मुख्य अतिथि बनाकर मंच पर बैठाया गया था।

बैंक में विलुप्त प्रजाति के बीज

लहरी बाई के बैंक में तीन प्रकार के विलुप्त सलहार के बीज सहित इसी तरह बड़े कोदो, लदरी कोदो, डोंगर कुटकी, लाल डोंगर कुटकी, सिताही कुटकी, नागदावन कुटकी, लालमडिया, गोदपारी मडिया सहित अन्य बीज भी महिला के बीज बैंक में उपलब्ध है। यह अनाज अब वैगावक क्षेत्र में दिखने लगा है। अपने आवास में मिट्टी की कोठी बनाकर बीज को संरक्षित रखा गया है। लहरी बाई के पास विलुप्त हो रहे मोटे अनाज के 25 से अधिक प्रजाति के बीज है।

लहरी बाई विगत 10 वर्ष से आसपास के 25 गांव के आदिवासी किसानों को अनाज के बदले यह बीज उपलब्ध कराती आ रही हैं। इस पहल से विलुप्त होती प्रजाति के अनाज अब भी लोगों के पास है। लहरी बाई ने बीज बैंक भी बना है। यह बहुत उल्लेखनीय पहल है। जिले में मोटे अनाज की पैदावार और बढ़ाने को लेकर विशेष कार्ययोजना बनाते हुए पहल की जा रही है।
विकास मिश्रा, कलेक्टर, डिंडोरी

मप्र का बढ़ाया गौरव

डिंडोरी जिले की बहन लाहरी बाई द्वारा श्रीअन्न के संरक्षण के लिए किए गए अभूतपूर्व कार्यों ने मप्र का गौरव बढ़ाया है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में मोटे अनाजों को प्रोत्साहन देने के प्रयासों को सफलता मिल रही है। प्रधानमंत्री द्वारा लाहरी बाई के प्रयासों की सराहना उनकी संवदेनशीलता का परिचायक है।

घर में सीखा हुनर

मैं बचपन से ही घर में बेवर खेती देख रही हूं। उसके बीज को सहेजने की जानकारी घर में मिली। मैंने भी बीजों को संरक्षित करना शुरू कर दिया। मुझे बीज संरक्षित करना अच्छा लगता है। बेवर बीज की खेती से उत्पन्न होने वाले अनाज को खाने शरीर हष्ट-पुष्ट रहता है। अधिकार वाले जंगल की जमीन पर मैं पारंपरिक खेती में इन बीजों का इस्तेमाल करती हूं।

जबलपुर में गोलमाल, वसूली में छूट रहा सरकार का पसीना

सात हजार अपात्रों ने हजम की 5 करोड़ सम्मान निधि

» अधिकारियों ने कहा-अब तक महज 18 फीसदी राशि वसूली

भोपाल। जबलपुर

मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में पीएम किसान सम्मान निधि योजना में बड़ी गड़बड़ी पकड़ी गई है, यहां डॉक्टर, इंजीनियर, वकील और नौकरी पेशा लोगों को भी पीएम किसान सम्मान निधि की राशि जारी कर दी गई। मामले का खुलासा होने के बाद अब इनसे वसूली की तैयारी की जा रही है। हैरानी की बात यह है कि ये रकम करोड़ों में है, जिसे वसूलने में सरकार के पसीने छूट रहे हैं।

हर साल दिए जाते हैं 6 हजार

देश के किसानों को आर्थिक मदद देने के मकसद से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की शुरुआत की गई थी। योजना के तहत हर चार महीने में सरकार किसानों के बैंक खाते में 2 हजार रुपए ट्रांसफर करती है। साल भर में 6 हजार रुपए किसानों को सम्मान निधि दी जाती है। फिलहाल, इस योजना की 13वीं किस्त जारी करने की तैयारी है, जो होली के पहले किसानों के

6 हजार 966 अपात्रों को जारी हुई रकम

दरअसल, जबलपुर जिले में ऐसे 6 हजार 966 किसान हैं, जिन्हें अपात्र होने के बावजूद इस योजना की किस्त जारी दे दी गई। जबलपुर जिले के भूअभिलेख अधिकारी ललित ग्वालवंशी के मुताबिक अपात्र किसानों से 5 करोड़ 68 लाख रुपये की राशि वापस ली जा रही है। इसके लिए उन्हें नोटिस जारी किया गया है।

अधिकारियों की मिलीभगत

अधिकारियों की मिलीभगत से योजना का लाभ डॉक्टर, इंजीनियर, वकील और नौकरीपेशा भी ले रहे हैं। इसमें से अधिकांश आयकरदाता भी हैं। योजना का लाभ पात्र से ज्यादा अपात्र किसान उठा रहे हैं। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि पाने वाले अपात्र हितग्राहियों से जिला प्रशासन ने वसूली शुरू कर दी है, लेकिन ऐसे किसानों से राशि वसूलना उनके लिए टेढ़ी खीर साबित हो रहा है। अधिकारियों के मुताबिक अब तक महज 18 फीसदी राशि ही वसूल की जा सकी है।

वसूली का भेजा नोटिस

अधिकारियों का कहना है कि जब योजना प्रारंभ हुई तो किसानों की मौजूदा सूची निकाली गई थी। उसी सूची के आधार पर सम्मान निधि की राशि किसानों के खातों में भेजी गई। प्रशासन को बाद में पता चला कि कई किसान इस राशि को पाने के पात्र नहीं हैं। अब उनसे यह राशि वसूली जा रही है। उन्हें तहसीलदारों के माध्यम से राशि वसूली का नोटिस भेजा गया है। नोटिस में कहा गया है कि जो राशि खातों में आई है, उसे वापस किया जाए।

भोपाल के प्रगतिशील किसान ने खेत में बनाई प्रयोगशाला, बेसिलस थुरिनजेनेसिस बैक्टीरिया और ट्राइकोडरमा हरजेनियम फंगस बनाया

कृषि मित्र जीवाणु तैयार कर रहे मिश्रीलाल

भोपाल। जागत गांव हमार

रासायनिक उर्वरकों के बेजा उपयोग से मिट्टी की उर्वरता काफी कम हो गई है। साथ ही मिट्टी में मौजूद फसलों के मित्र जीवाणु समाप्त हो गए हैं। इस वजह से किसानों को कीट प्रकोप से फसल बचाने, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए महंगे कीट नाशकों का इस्तेमाल करना पड़ता है। वो भी पूरी तरह असरकारक नहीं होते हैं। ऐसी स्थिति में भोपाल के प्रगतिशील किसान मिश्रीलाल राजपूत ने अपने खेत के एक कमरे को प्रयोगशाला का रूप दे दिया है। इसमें वह मामूली लागत से खेती के मित्र जीवाणु विकसित कर उनका कीटनाशक के तौर पर सफल प्रयोग कर रहे हैं। उनके द्वारा बेसिलस थुरिनजेनेसिस बैक्टीरिया और ट्राइकोडरमा हरजेनियम फंगस बनाया गया है। इनके इस्तेमाल से उन्होंने टमाटर, गोभी और चने पर लगी इल्लियों का सफाया कर दिया है। मिश्रीलाल ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा, नई दिल्ली से इसके लिए प्रशिक्षण लिया है और पूसा की विज्ञानी रेखा बलोदी ने भी इसे असरकारक बताया है।

यह विधि अपनाई

पानी को छानकर उसमें 25 ग्राम डेक्सट्रोज और 15 ग्राम अगर मिलाने के बाद पानी को दोबारा उबाला जाता है। पूरी तरह ठंडा होने के पहले पानी को प्लास्टिक की ट्रे में आधा इंच तक फैला दिया जाता है। 10 मिनट में वह जम जाता है। इसके बाद ट्राइकोडरमा हरजेनियम के कण ट्रे में तीन चार स्थान पर चिमटी की सहायता से छोड़ दिए जाते हैं। तापमान 25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रखा जाता है।

जैविक पद्धति से खेती

ग्राम खजूरीकला निवासी मिश्रीलाल ने बताया कि वह 15 वर्ष से जैविक पद्धति से खेती कर रहे हैं। वह मात्र 200 रुपए की लागत से आलू अथवा चावल, बाजरा से ट्राइकोडरमा हरजेनियम फंगस को विकसित कर लेते हैं। इसके लिए एक लीटर पानी में 250 ग्राम आलू को उबाला जाता है।

फिर करते हैं छिड़काव

सात दिन में ट्राइकोडरमा हरजेनियम फंगस इस्तेमाल के योग्य हो जाती है। बाजार से 25 ग्राम मीडिया बैक्टीरियल लाकर उसे बंद कमरे में गर्म किया जाता है। एक लीटर पानी में बैक्टीरिया विकसित हो जाता है।15 लीटर पानी में 50 मिली थुरिनजेनेसिस बैक्टीरिया मिलाकर फसलों पर छिड़काव करते हैं।

पर्यावरण बचाने की पहल

मिश्री लाल राजपूत ने बताया कि 15 वर्ष पहले वह भी खेती में रासायनिक खाद का इस्तेमाल करते थे। इससे उत्पादकता में तो कुछ बढ़ोतरी दिखी, लेकिन जमीन की उर्वरता प्रभावित होने लगी थी। केंचुए गायब हो गए थे। अब वह खेती में पूरी तरह जैविक खाद का इस्तेमाल करते हैं। साथ ही जैविक पद्धित से तैयार कीटनाशकों से कीट प्रकोप पर काबू पा लेते हैं।

बेसिलस थुरिनजेनेसिस बैक्टीरया है, जबकि ट्राइकोडरमा हरजेनियम फंगस है। दोनों जैविक हैं। इन मित्र जीवाणुओं का इस्तेमाल फसलों को कीट प्रकोप से बचाने के लिए किया जाता है। इनके इस्तेमाल से पर्यावरण को किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होता। किसान इन्हें अपने स्तर पर भी विकसित कर सकते हैं। हालांकि समय-समय पर इनकी गुणवत्ता की जांच प्रयोगशाला में कराते रहना चाहिए।

रेखा बलोदी, वैज्ञानी, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान पूसा, नई दिल्ली

20 टन मिर्च को यूरोप-उत्तर अमेरिका में निर्यात करने में सफलता

विदेश में धूम मचा रही खरगोन की मिर्ची

- 47 दिनों में एफपीओ के किसानों ने तीसरी बार मिर्च विदेश निर्यात की
- विदेशी बड़े चाव के साथ लाल मिर्च को ब्रेकफास्ट, लंच में कर रहे शामिल

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के खरगोन जिले के दो विकास खंडों के करीब एक दर्जन ग्रामों में एकीकृत कीट प्रबंधन प्रणाली से उत्पादित 20 टन मिर्च को यूरोप और उत्तर अमेरिका में निर्यात करने में सफलता प्राप्त की है। खरगोन के उद्यानिकी विभाग के वरिष्ठ उद्यान विस्तार अधिकारी पीएस बडोले ने बताया कि खरगोन और सेगाव विकासखंड के एक दर्जन से अधिक ग्रामों के किसानों ने एकीकृत कीट प्रबंधन प्रणाली अपनाते हुए तीन बार में 19.4 टन मिर्च निर्यात करने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने बताया कि मिर्च खरगोन जिले की एक जिला एक उत्पाद में चयनित फसल है। खरगोन की लाल मिर्च-एक जिला एक उत्पाद में खरगोन जिले की चिन्हित फसल अब विदेशों में धूम मचा रही है। यहां के किसानों ने अपनी मिर्च को इस तरह परिष्कृत कर लिया है कि विदेशी लोग अब बड़े चाव के साथ लाल सुर्ख मिर्च को ब्रेकफास्ट, लंच और डिनर में शामिल करने लगे है। डालकी के फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी से जुड़े किसानों ने एक फार्मूला विकसित कर लिया है। इस फार्मूले पर टेराग्लेब समूह के 27 किसानों की लगभग 500 एकड़ में उपजी मिर्च यूरोप के मैक्सिको देश मे धाक जमा रही है।

तीन बार निर्यात की मिर्च

किसानों के समूह ने सिर्फ एक बार ही निमाड़ की मिर्च को यूरोप निर्यात करने में सफलता प्राप्त की है। उन्होंने सबसे पहली बार 25 दिसम्बर को 8 किसानों ने और फिर 24 जनवरी 27 किसानों ने और अब 8 फरवरी को इतने ही किसानों की मिर्च को निर्यात किया है। 24 दिसम्बर को 5.5 टन, 24 जनवरी को 6.5 टन और 8 फरवरी को 6.4 टन मिर्च मुंबई पोर्ट के माध्यम से मैक्सिको भेजी है।

चिंता हो गई दूर

फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के बालकृष्ण पाटीदार ने बताया कि खरगोन में डालका के किसानों के समूह ने मात्र 47 दिनों में मांग के अनुसार 3 बार यूरोप के देशों में निमाड़ की मिर्च निर्यात की है। जब पहली बार यूरोप मिर्च निर्यात होने वाली थी। तब इन किसानों के मन में चिंताएं थी, लेकिन अब जब भी मांग आती है तो बड़े उत्साह के साथ तैयार रहते हैं।

ऐसे मिली किसानों को सफलता

समूह के संचालक पाटीदार ने बताया कि समूह के किसानों ने सबसे पहले विदेश में प्रतिबंधित रसायनों का अध्ययन किया। उसके बाद किसानों के साथ मिलकर कृषि की सभी तकनीकों और उपयोग होने वाली सामग्री तथा रसायनों के छिड़काव पर ज्यादा फोकस किया गया। विदेश में प्रतिबंधित रसायनों के बगैर खेती प्रारम्भ की। इसके बाद कई स्थानों के अलावा केरला की एविटी लेबोरेटरी में टेस्ट सेम्पल्स भेजे। सेम्पल्स पास होने के बाद निर्यात योग्य होने पर योजना बनाई गई।

-कार्यक्रम जारी- सम्मिलन 16 को होगा

49 ग्राम पंचायतों के उप सरपंचों का होगा चुनाव

भोपाल। जागत गांव हमार

राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा 49 ग्राम पंचायतों के रिक्त उप सरपंच पदों के निर्वाचन के लिए सम्मिलन आयोजित करने कार्यक्रम निर्धारित कर दिया गया है। सम्मिलन 16 फरवरी 2023 को किया जाएगा। सचिव राज्य निर्वाचन आयोग राकेश सिंह ने जानकारी दी है कि जनपद पंचायत राहतगढ़ की ग्राम पंचायत सेमराचरखरा, गढ़ोलीकला, उमरियासेमरा, पड़ारसोई, जनपद पंचायत जैसीनगर की ग्राम पंचायत सरखड़ी, परगासपुरा, विशनपुरा, अमोदा, गेहूरासबुजुर्ग, साजी, बरखुआमहंत, सेठिया, केवलारी, जनपद पंचायत बीना की ग्राम पंचायत सेमरखेड़ी, पार, गढ़ा, गुलौवा, बरौंदियाघाट, जनपद पंचायत खुरई की ग्राम पंचायत मुहासा, तेवरा, सिलौधा, मंझेरा, जनपद पंचायत मालथौन की ग्राम पंचायत पथरियाचिन्ताई, जनपद पंचायत रहली की ग्राम पंचायत चौका, बौरई, रतनारी, बेलई, रेंगुवां, निवारी, जूना, विजयपुरा, धौनाई, इमलिया, कड़ता, समनापुरकला, रानगिर, पिपरियानरसिंह, जनपद पंचायत देवरी की ग्राम पंचायत चिरचिटा सुखजू, पनारी, जनपद पंचायत केसली की ग्राम पंचायत नारायणपुर, जनपद पंचायत बंडा की ग्राम पंचायत ढाड़, पड़वार, भूसाकमलपुर, खोजमपुर, खुवारी, रीछईसागर और जनपद पंचायत शाहगढ़ की ग्राम पंचायत महूना, भीकमपुर और पुराशाहगढ़ में उप सरपंच का निर्वाचन होगा।

वैज्ञानिकों ने तैयार किया गेहूं 4 नई किस्में अगले सीजन से किसानों को मिलेगा बीज

इंदौर। इंदौर में कृषि विज्ञानियों ने गेहूं की एक साथ चार नई किस्में विकसित की हैं, जो पोषक तत्वों से भरपूर होने के साथ अच्छी पैदावार देंगी। इनका नाम पूसा ओजस्वी, पूसा हर्षा, पूसा पौष्टिक और पूसा कीर्ति है। इन किस्मों को मध्य भारत के लिए तैयार किया गया है।

इन राज्यों के लिए होगीं उपयोगी: कृषि विज्ञानी केसी शर्मा का कहना है कि गेहूं की यह प्रजातियां मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान के कोटा, उदयपुर और उप के झांसी संभाग के लिए उपयोगी होंगी। चारों किस्मों की क्वालिटी और पोषण तत्वों की जांच करनाल स्थित कृषि अनुसंधान केंद्र में पूरी हो चुकी है।

एक सप्ताह में पूरी हो जाएगी नोटिफिकेशन की प्रक्रिया: नोटिफिकेशन की प्रक्रिया एक सप्ताह में पूरी हो जाएगी। किसानों को आगामी सीजन से यह किस्में उपलब्ध हो सकेंगी। अभी अनुसंधान केंद्र में इसके बीज तैयार किया जा रहे हैं।

प्रदेश के दो रीजन के पांच होटल में लिया जा रहा फीडबैक

पर्यटन विभाग के होटल में पहुंची महुए की हेरिटेज शराब 'मोंर्ड'

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रदेश को देश-दुनिया में पहचान दिलाने के मकसद से तैयार की गई महुए की हेरिटेज शराब को मप्र पर्यटन विकास निगम की होटल में फीडबैक के लिए पहुंचा दिया गया है। प्रदेश के दो रीजन की पांच होटलों में पहुंचाई गई इस शराब को लेकर फीडबैक भी लिए जा रहे हैं। मप्र पर्यटन विकास निगम की होटल में 15 दिन पहले ही टेस्टिंग के लिए इसे रखवाया गया है। इस हेरिटेज शराब को मोंर्ड नाम दिया गया है। प्रदेश सरकार ने महुए से बनने वाली इस हेरिटेज शराब के लिए पायलट प्रोजेक्ट के तहत अलीराजपुर और डिंडोरी जिले का चयन किया था। सबसे पहले अलीराजपुर जिले के कट्ठीवाड़ा क्षेत्र में इस प्रोजेक्ट को शुरू किया गया। जिला प्रशासन के निर्देशन में लंबे समय से इस पर काम किया जा रहा था। टेस्टिंग के बाद पिछले महीने के आखिरी सप्ताह में इसे पर्यटन विकास निगम के होटल में पहुंचाया गया। प्रदेश के 6 रीजन में से फिलहाल इसे इंदौर रीजन के मांडू और भोपाल रीजन की चार जगह पर इसे रखवाया गया है, जहां आने वाले मेहमानों को उनकी मांग पर इसे टेस्ट करवाया जा रहा है और उनसे इसे लेकर फीडबैक भी लिए जा रहे हैं।

फीडबैक के लिए फिलहाल 180 एमएल की पेकिंग में हेरिटज शराब को रखवाया गया है। हालांकि, आने वाले समय में ये 90 एमएल और 750 एमएल की पैकिंग में भी उपलब्ध होगी। कट्ठीवाड़ा में हेरिटेज शराब निर्माण के लिए तैयार यूनिट का संचालन स्व सहायता समूह कर रहा है। समूह में काम करने वाली टीम के सदस्य को इसके लिए पुणे के वसंतदादा शुगर इंस्टिट्यूट से ट्रेनिंग भी दिलवाई जा चुकी है। इसी इंस्टिट्यूट में शराब की गुणवत्ता की जांच भी हुई है।

भरवा रहे फीडबैक फॉर्म

पर्यटन विकास निगम की होटल में शराब को टेस्ट करवाने के बाद कई बिंदुओं पर फीडबैक फॉर्म भरवाया जा रहा है। अब तक मिले फीडबैक में हेरिटेज शराब को अच्छा प्रतिसाद मिला है। वहीं, कुछ लोगों ने इसे खरीदने की इच्छा भी जाहिर की है। रेंटिंग के लिहाज से भी शराब को किसी ने 3 स्टार से नीचे रेटिंग नहीं दी है। इसके स्वाद से लेकर महक तक को लेकर फॉर्म में पूछा जा रहा है। इंदौर रीजन के मांडू में मालवा रिसोर्ट में इसे रखवाया गया है, तो भोपाल रीजन के पलाश रेसीडेंसी, विंड एंड वेव्स, लेक व्यू रेसीडेंसी और कुशाभाऊ ठाकरे इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर में इसे रखा गया है।

यूनिट लगाने में खर्च हुए 65 लाख

महुआ शराब प्लांट में सरकार ने करीब 65 लाख रुपए खर्च किए हैं। इसमें करीब 30 लाख की मशीन ही है। कट्ठीवाड़ा के पुराने सरकारी वेयर हाउस में इस प्लांट को लगाया गया है, जहां आने वाले समय में जिला प्रशासन अन्य कुछ यूनिट लगाने की तैयारी में भी है।

लंबा समय लग गया शराब तैयार करने में

महुए की ये शराब क्षेत्र में आदिवासी समाज घरों में सीमित संसाधन में ही तैयार कर देता है। उसी शराब को बनाने में प्रशासन को महीनों का वक्त लग गया। महीनों की तैयारी, विशेष प्रशिक्षण और लाखों के खर्च के बाद भी दो बार इसे टेस्टिंग के लिए भेजा, तो हेरिटेज शराब का वो क्वालिटी टेस्ट नहीं आ पाया था। इसे तैयार करने के बाद लोकल स्तर पर टेस्टिंग प्रोसेस में कई लोगों ने महुए की स्मेल की शिकायत की थी, तो कई ने पारंपरिक स्वाद ना होने की। अब पर्यटन विकास निगम की होटल से मिले फीडबैक का भी इंतजार किया जा रहा है। हालांकि, मामले में अधिकारियों का कहना है कि जब भी कोई नया प्रोडक्ट तैयार होता है, तो उसमें समय लगता है। चूंकि, ये एक महत्वाकांक्षी योजना है और सरकार का पायलट प्रोजेक्ट भी, इसलिए वक्त लिया जा रहा है।

रबी सीजन के लिए जिले में कुल 2.77 लाख के मुकाबले 2.78 लाख बोवनी

प्रदेश में गेहूं का रकबा घटा, जबलपुर में बढ़ा

जबलपुर। जागत गांव हमार

खरीफ के बाद रबी उपाजन की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। इस सीजन के लिए बोवानी का अंतिम रकबा सामने आ चुका है। आंकड़ों पर गौर करें तो पता चलता है कि इस साल मध्यप्रदेश में गेहूं का रकबा अप्रत्याशित रूप से घटा है, जबकि जबलपुर जिले में यह बढ़ गया है। इस रबी सीजन में गेहूं का रकबा 10 हजार 250 हेक्टेयर बढ़ा है, जबकि मध्यप्रदेश में यह रकबा लगभग चार लाख 15 हजार हेक्टेयर कम हुआ है। एक सप्ताह पहले तक जो जानकारियां मिल रही थीं, उनसे लग रहा था कि इस साल जिले में गेहूं की बोवाई का रकबा 10 से 12 हेक्टेयर तक घट सकता है, लेकिन आखिरी के चार दिनों में हुई बोवनी के आंकड़ों ने कमाल कर दिया। सीजन की बोवई पूरी होने के बाद कुल रकबा लक्ष्य के मुकाबले 10 हजार 250 हेक्टेयर आगे निकल गया। हालांकि इस सीजन में तिलहनों को लेकर किसानों में बहुत उत्साह नहीं दिखा।

किस उपज का रकबा बढ़ा, किसका घटा

रबी सीजन की सभी फसलों पर नजर डालें तो गेहूं के अलावा मसूर, मटर, तिवड़ा का रकबा पिछले सीजन और इस सत्र के और इस साल के लक्ष्य के मुकाबले बढ़ा है। जबकि चना, राई-सरसों, अलसी और गन्ना के रकबे में गिरावट आई है।

एक नजर आंकड़ों पर

जिले में गेहूं की बोवनी का लक्ष्य 188 हजार हेक्टेयर रहा, जो 198.25 हजार हेक्टेयर हुआ। इसी तरह चना 39 के मुकाबले 25.59, मसूर चार कुमुकाबले साढ़े चार, मटर 35.6 के मुकाबले 39.6 राई-सरसों 5.5 के मुकाबले 4.86 हजार हेक्टेयर रहा।

वास्तविक बोवाई एक लाख 98 हजार 250 हेक्टेयर

गेहूं के लिए इस सीजन का लक्ष्य एक लाख 88 हजार हेक्टेयर रहा, जबकि वास्तविक बोवाई एक लाख 98 हजार 250 हेक्टेयर हुई। अन्य फसलों को मिलाकर भी बात करें तो जिले में बोवाई का क्षेत्र पिछले वर्ष और इस सीजन के लक्ष्य के अनुपात में अधिक रहा है। पिछले साल बोवई का कुल रकबा दो लाख 68 हजार 290 हेक्टेयर रहा, जिसे इस सीजन के लिए बढ़ाकर दो लाख 77 हजार 600 हेक्टेयर लक्ष्य निर्धारित किया गया था। लेकिन इस सीजन में बोवाई वास्तविक आंकड़ा दो लाख 78 हजार 730 हेक्टेयर पहुंच गया।

सीएम शिवराज सिंह चौहान ने की थी घोषणा, हर पंचायत को मिलेंगे 25 लाख

मध्य प्रदेश में किसानों के खेत तक बनाई जाएगी सड़क

भोपाल। जागत गांव हमार

चुनावी साल में राज्य सरकार हर वर्ग को साधने का प्रयास कर रही है। मनरेगा के अंतर्गत किसानों के खेत तक सड़क बनाने का काम अब प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा। इसमें भी प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक सड़क बनाई जाएगी। उस स्थान का चयन पहले किया जाएगा, जहां सड़क बनाने से कम से कम 10 किसान लाभान्वित हो रहे हों। 25 लाख रुपए तक के निर्माण के लिए एजेंसी ग्राम पंचायत को ही बनाया जाएगा। बता दें कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने खेत सड़क योजना को फिर प्रारंभ करने की घोषणा की थी। मध्य प्रदेश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी (मनरेगा) के अंतर्गत खेत तक पहुंच आसान बनाने के लिए खेत सड़क योजना लागू की गई थी। इसके दुरुपयोग को लेकर शिकायतें मिलने पर योजना बंद कर दी गई थी।

भारतीय किसान संघ ने पिछले दिनों भोपाल में हुए प्रदर्शन में सरकार से खेत सड़क योजना को फिर शुरू करने की मांग की थी। संगठन का कहना था कि इससे खेत से उपज लाने में आसानी होगी। इसे देखते हुए शिवराज सिंह ने संगठन के कार्यक्रम और पंचायत प्रतिनिधियों के सम्मेलन में खेत सड़क योजना को फिर से लागू करने की घोषणा की थी।

मापदंड का करना होगा पालन

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अपर मुख्य सचिव मलय श्रीवास्तव ने सभी कलेक्टरों को प्राथमिकता के आधार पर खेत सड़क योजना को मनरेगा में शामिल करने के निर्देश दिए हैं। इसमें अनुसूचित जाति-जनजाति बहुल ग्राम के साथ टोलों के खेतों को प्राथमिकता दी जाएगी। एक से अधिक सड़क यदि किसी पंचायत क्षेत्र में बनाई जानी है तो उसके लिए राज्य स्तर से अनुमति लेनी होगी। सड़क मुरम और गिट्टी की होगी। इसके निर्माण में मशीन का उपयोग किया जा सकेगा लेकिन मजदूरी और सामग्री भुगतान के लिए निर्धारित मापदंड का पालन अनिवार्य रूप से करना होगा।

पशु पालन व्यवसाय में जैव सुरक्षाः महामारी रोकने का एक उत्तम उपाय

» डा. विपिन कुमार गुप्ता
» डा. एस. पी. एस. परिहार
» डा. अनुराधा बुधोलिया
» डा. बी. एस. सी. रेड्डी

सहायक प्राध्यापक, पशु जन स्वास्थ्य एवं महामारी विज्ञान विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशु पालन महाविद्यालय, महू, म.प्र.

पशुओं (गोवंश) का बीमारी फैलाने वाले रोगाणुओं से बचाव ही जैवसुरक्षा कहलाता है। रोगाणुओं से संक्रमण के दौरान पशुओं में मृत्युदर बढ़ जाती है एवं उत्पादकता में कमी के साथ कभी-कभी यह महामारी का रूप भी ले लेती है। लाभप्रद पशुपालन व्यवसाय हेतु जैव सुरक्षा कार्यक्रम का होना बहुत आवश्यक है। सामान्यतः रोग पैदा करने वाले जीवाणु हर जगह पाए जाते हैं। ये जीवाणु पशु फार्म, शेड के भीतर, पशु खाद्य सामग्री, पानी, इत्यादि में बहुतायत से मिलते हैं। यह पशुओं के भीतर भी पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए फार्म की सतह पर जमी धुल में एवं गोबर में लाखों की संख्या में उपस्थित होते हैं। यह रोगाणु बाह्य वातावरण में लम्बी अवधि तक जीवित रह सकते हैं।

बीमारी फैलाने वाले जीवाणु, फार्म के बाह्य वातावरण में भी उपस्थित हो सकते हैं एवं फार्म में प्रवेश कर बीमारी संक्रमित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए यह संक्रमण किसी बाहरी व्यक्ति, वाहन, कुत्ते, बिल्ली, चूहे अथवा पक्षी द्वारा हो सकता है। बहुत सी बीमारियां पशुओं से मनुष्यों को होती हैं, हालांकि संगठित और स्थापित पशुधन फॉर्म के पशुपालक इन समस्याओं का ध्यान रखते हैं फिर भी बढ़ते औद्योगिकीकरण पशु आधारित प्रोटीन की मांग को पूरा करने के साथ-साथ पशुओं और मनुष्यों में बढ़ते संक्रमण को नियंत्रित करने के लिए जैव सुरक्षा अति आवश्यक है। यद्यपि जैवसुरक्षा उपाय सरल है, लेकिन इनको क्रियान्वित करना बहुत कठिन है। हालांकि जैव सुरक्षा ऐसा उपाय नहीं है, जो घटना होने के बाद ही लागू होना चाहिए यह दैनिक व्यवहार में लागू करने की चीज है। पशु पालन व्यवसाय में हमें दो प्रकार की जैवसुरक्षा की आवश्यकता है -

1. आतंरिक जैवसुरक्षा, 2. बाह्य जैवसुरक्षा

आतंरिक जैवसुरक्षा: डेयरी फार्म की आतंरिक सुरक्षा हेतु कीटाणुओं का नियंत्रित होना बहुत आवश्यक है। इसलिए शेड में नियमित अंतराल पर उचित कीटाणुनाशक दवा का छिड़काव करना चाहिए। ध्यान रहे दवा के उपयोग से मनुष्य एवं गोवंश के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव न पहुंचेइ इसका चयन पशुचिकित्सक से सलाह उपरांत करना चाहिए। बीमारियों के नियंत्रण का दूसरा तरीका है- सामयिक टीकाकरण:गोवंश में पाए जाने वाली बहुतायत विषाणुजनित बीमारियों पर जीवाणुनाशक दवाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है इसलिए सही समय पर टीकाकरण से विषाणुजनित बीमारियों से बचाव संभव है। अतः नियमित कीटाणुनाशक दवाओं का छिड़काव एवं सामयिक टीकाकरण से आतंरिक जैवसुरक्षा को अर्जित किया जा सकता है।

सामयिक टीकाकरण: 1. गलघोटू रोग: गलघोटू बीमारी में, फिटकरी सांद्रित टीका 5 मिलीलीटर खाल के नीचे प्रथम बार 6 महीने की उम्र में तत्पश्चात 6 महीने के बाद/तेल गुण वर्धक टीका 3 मिलीलीटर मास के अंदर प्रथम बार 6 माह की उम्र में तत्पश्चात हर 9 माह के बाद गाय, भैंस, भेड़, बकरी एवं शुकर में लगाया जाता है।

2. खुरपका मुंहपका रोग: खुरपका मुंहपका रोग में एल्यूमीनियम हाइड्रोक्साइड जैल अवशोषित टीका 2 मिलीलीटर खाल के नीचे प्रथम बार 3 महीने की उम्र में, तत्पश्चात 9 महीने की उम्र में बूस्टर खुराक और उसके बाद हर छह महीने पर तथा तेल गुण वर्धक खुरपका मुंहपका वैक्सीन 2 मिलीलीटर गहरे मास के अंदर बूस्टर 9 महीने के बाद गाय, भैंस, भेड़, बकरी

एवं शुकर में लगाया जाता है।

3. ब्रूसेलोसिस रोग: ब्रूसेला अबोर्टिस का टीकाकरण गाय, भैंस, भेड़, बकरी एवं शुकर प्रजाति में 2 मिलीलीटर खाल के नीचे 4 से 6 महीने की मादा पशु में लगाया जाता है।

4. लंगड़ा बुखार रोग: लंगड़ा बुखार जीवाणु टीका गाय, भैंस में 5 मिलीलीटर खाल के नीचे वर्षा ऋतु के प्रारंभ होने से पूर्व वर्ष में एक बार लगाया जाता है।

5. गिल्टी रोग: एंथ्रेक्स बीजाणु टीका, गाय, भैंस, भेड़, बकरी एवं शूकर में 1 मिलीलीटर खाल के नीचे वर्षा ऋतु के प्रारंभ होने से पूर्व वर्ष में एक बार लगाया जाता है।

बाह्य जैवसुरक्षा: आन्तरिक जैवसुरक्षा के उपरांत पशु फार्म के बाह्य वातावरण से भी बहुतायत में कीटाणु प्रवेश कर सकते हैं। इनसे बचाव हेतु निम्नानुसार उपाय अपेक्षित है-

-डेयरी फार्म के प्रवेश द्वार पर कीटाणुनाशक फुट बाथ होना चाहिए, जिससे रोगाणुओ को नष्ट किया जा सके।

-किसी भी बाहरी व्यक्ति एवं वाहन को फार्म के अन्दर प्रवेश न होने दिया जाये, यदि आवश्यक है तो सम्बंधित व्यक्ति व वाहन का दवायुक्त स्थल से होकर जाना सुनिश्चित करे।

-पशुखाद्य सामग्री एवं अन्य आवश्यक सामान लाने वाले वाहनों को द्वार के बाहर ही रोकें तत्पश्चात दवा का छिड़काव करें।

-पशुखाद्य एवं अन्य सामग्री ज्ञात स्त्रोतों से ही प्राप्त करें।

-पशु शेड में समय-समय पर मलमूत्र निस्तारण आवश्यक रूप से करें।

-पशु शेड एवं दुग्ध दोहने के स्थल पर अलग-अलग कर्मचारियों का चयन सुनिश्चित किया जाए।

-बाहरी जानवर/ पक्षियों को फार्म में प्रवेश से रोकें।

-शेड तथा फार्म में उत्सर्जित अवांछित उत्पादों का उचित व्यवस्थापन होना चाहिए।

-खाली शेड की साफ-सफाई, धुलाई, पुताई एवं आवश्यकतानुसार निर्जलीकरण करने के पश्चात उपयोग किया जाए।

-फार्म के आस-पास दूषित जल एकत्रित न होने दे।

फार्म में कार्यरत कर्मचारियों की नियमित स्वास्थ्य जाँच सुनिश्चित करें एवं निजी स्वच्छता का भी ध्यान रखें।

जैव सुरक्षा के लाभ: हालांकि जैव सुरक्षा के नियम अपनाने से प्रत्यक्ष लागत व अतिरिक्त मानव शक्ति से खर्चे में बढ़ोतरी अवश्य होती है, लेकिन इसमें निम्नलिखित लाभ संभावित है।

महामारी से बचाव: रोगों का शीघ्र पता लगाना और उनका उचित प्रबंधन करना। स्वस्थ पशुधन व उच्च उत्पादकता। सार्वजनिक/मानव स्वास्थ्य के लिए सुरक्षा।

निष्कर्ष: फायदेमंद पशु पालन व्यवसाय हेतु जैवसुरक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैइ बीमारियों का स्वरुप प्रति दिन निरंतर बदल रहा है एवं नई - नई बीमारियाँ इस व्यवसाय के लिए चुनौतीया पैदा कर रही हैइ अतः इस व्यवसाय की देखभाल की जिम्मेदारी और अधिक ब? गई हैइ अतः ऊपर बताई गई आतंरिक एवं बाहरी जैवसुरक्षा उपायों का यदि सही तरीके से पालन किया जाये तो यह व्यवसाय उत्तरोतर फायदेमंद साबित होगा।

ठंड के मौसम में कैसे करें मुर्गियों की देखभाल

» डॉ. याशिर आमीन राथेर
» डॉ. शानू सिंगोर
» डॉ. श्रेयांश मिश्रा
» डॉ. डॉ. तृप्ति लोधी
» डॉ. ब्रजमोहन सिंह धाकड़
» डॉ. आदित्य प्रताप

कुक्कुट विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे.प.वि.वि. जबलपुर (म. प्र.)

पशुचिकित्सा औषधि विज्ञान विभाग, पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे.प.वि.वि. जबलपुर(म. प्र.)

पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य और महामारी विज्ञान विभाग, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे.प.वि.वि.जबलपुर

देश की अर्थव्यवस्था में देश में मुर्गीपालन का महत्वपूर्ण स्थान है। मुर्गीपालन कम लागत एवं कम समय में लाभ देने वाला एकमात्र लाभकारी व्यवसाय है। सर्दियों के मौसम में वातावरण का तापमान बहुत नीचे चला जाता है जिससे मुगियों में खराब प्रभाव पड़ता है, जैसे खराब एफसी आर, वजन कम आना, कम पानी पीना, कम अंडे देना आदि । जोकि प्रत्यछ और अप्रत्यक्ष रूप से मॉस, अंडा उत्पादन को प्रभावित करता है सर्दियों के मौसम समय कुछ विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।

मुर्गीपालन के व्यवसाय से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए सही वैज्ञानिक एवं तकनीकी जानकारी का होना अत्यन्त आवश्यक है।

सर्दियों के मौसम में मुर्गीपालन के लिए चूजे लाने से पहले या बाद में कुछ विशेष ध्यान रखने की आवश्यधकता होती है।

1. मकान / घर प्रबंधन: सर्दियों के मौसम में तपमान नीचे चला जाता है मुर्गीपालकों को इससे बचने के लिए प्रबधंन करने चाहिए।

मुर्गीपालन के आवास में ओस की बूंद टपकती है इससे बचने के लिए मुर्गीपालकों को मुर्गी आवास के ऊपर प्लास्टिक ,बोरे, फट्टी आदी बिछा देना चाहिए एवं किनारों के पर्दे मोटे बोरे और प्लास्टिक के लगाना चाहिए, ताकि वे ठंडी हवा के प्रभाव को रोक सकें।

रात में जाली का लगभग 2 फीट नीचे का हिस्सा पर्दों से ढक दें। इसमें खाली बोरी और प्लास्टिक आदि का इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे अंदर का तापमान बाहर की अपेक्षा गर्म रहेगा।

2. ब्रूडिंग का प्रबंधन: सर्दियों के मौसम में मुर्गीपालन करते समय एक अंगीठी, गैस हीटर, बल्ब या स्टोव मुर्गीघर में जला दें। ध्यान रखें कि अंगीठी अंदर रखने से पहले इसका धुआं बाहर निकाल दें। धुआं बाहर नहीं निकालने पर मुगियो में खराब प्रभाव/मृत्यु हो सकती है। समय-समय पर तापमान की जांच आवश्य करनी चाहिए।

अगर मुर्गियां एक जगह झुण्ड में एकत्रित हो रही है इसका अर्थ है की उन्हें ठण्ड लग रही है। अतः घर में गर्मी बढ़ाने की आवश्यकता है।

3. दाने का प्रबंधन: शीतकालीन मौसम में मुर्गीदाना की खपत बढ़ जाती है। यदि मुर्गीदाना की खपत बढ़ नहीं रही है तो इसका अर्थ है कि मुर्गियों में किसी बीमारी का प्रकोप चल रहा है।

ठण्ड में मुर्गियों को अपने शरीर का तापमान बनाए रखने के लिये अधिक उर्जा की आवश्यकता होती है। इसलिय दाने में अतिरिक्त उर्जा देने की आवश्यकता रहती है।

4. पानी का प्रबंधन : शीतकालीन मौसम में पानी की खपत बहुत ही कम हो जाती है क्योंकि इस मौसम में पानी हमेशा ठंडा ही बना रहता है। इसलिए मुर्गी इसे कम मात्रा में पी पाती हैं। जिससे पाचन शक्ति कम होती है। अतः इस स्थिति से बचने के लिए मुर्गियों को बार-बार शुद्ध और ताजा पानी देते रहना चाहिए।

ठंढ के मौसम में मुर्गीपालन करते समय मुर्गियों को पीने के लिए गुनगुना पानी ही दिया करें।

5. लिटर का प्रबंधन: पद्धति में रखी मुर्गियों के बाड़े में जो भूसा / बुरादा (लिटर) जमीन पर बिछा होता है वह सूखा होना चाहिए। उस पर पानी रिस जाये तो तुरन्त गीला बिछावन (लिटर) हटाकर वहां सूखा बिछावन डाल दें, अन्यथा मुर्गियों को ठंड लग सकती है। गर्मी की अपेक्षा ठन्ड में बुरादे की मोटाई दोगुनी होनी चाहिय।

खाद्य सुरक्षा की समस्या को हल कर सकती है सीवीडी की खेती

जैसे-जैसे इंसानी जरूरतें बढ़ रही हैं उनके साथ-साथ कृषि उत्पादन के लिए भूमि पर भी दबाव बढ़ता जा रहा है। ऐसे में क्या सीवीड फार्मिंग इस कृषि भूमि की बढ़ती मांग को कम करने में मददगार हो सकती है। इसे समझने के लिए यूनिवर्सिटी ऑफ क्रीसलैंड द्वारा एक नया अध्ययन किया गया है। इस रिसर्च से पता चला है कि समुद्री सिवार यानी सीवीड की खेती न केवल खाद्य सुरक्षा की समस्या को हल कर सकती है, साथ ही यह जैव विविधता को होते नुकसान और जलवायु में आते बदलावों से निपटने में भी मददगार हो सकती है।

रिसर्च से पता चला है कि यदि 2050 तक इंसान अपनी खाद्य संबंधी जरूरत के करीब 10 फीसदी हिस्से को समुद्री सिवार की मदद से पूरा कर लेता है, तो इससे कृषि भूमि उपयोग को 11 करोड़ हेक्टेयर तक कम किया जा सकता है। मतलब स्पष्ट है कि सीवीड की खेती कृषि भूमि उपयोग पर बढ़ते दबाव को कम करने में मददगार हो सकती है। इस बारे में शोध और यूनिवर्सिटी ऑफ क्रीसलैंड के स्कूल ऑफ अर्थ एंड एनवायरनमेंटल साइंस से जुड़े शोधकर्ता स्कॉट स्पिलियास का कहना है कि सीवीड को भोजन, पशुओं के चारे, प्लास्टिक, फाइबर, डीजल और इथेनॉल सहित वाणिज्यिक उत्पादों के एक बिल्डिंग ब्लॉक के रूप में उपयोग करने की काफी संभावनाएं मौजूद हैं।

उनके अनुसार रिसर्च से पता चला है कि समुद्री सिवार, कृषि के लिए बढ़ते भूमि उपयोग की मांग को कम करने के साथ-साथ वैश्विक स्तर पर हर वर्ष कृषि क्षेत्र से होते करीब 260 करोड़ टन कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ2) के बराबर ग्रीनहॉउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने में मददगार हो सकती है।

गौरतलब है कि समुद्री सिवार (सीवीड), समुद्री पौधों और शैवाल की विभिन्न प्रजातियों का सामान्य नाम है जो समुद्र, नदियों, झीलों और अन्य जल स्रोतों में उगते हैं। इनमें कुछ समुद्री सिवार बहुत छोटे तो कुछ बहुत बड़े होते हैं जैसे विशाल केल्प। हालांकि इनमें से ज्यादातर मध्यम आकार के होते हैं जो लाल, हरे, भूरे और काले आदि विभिन्न रंगों के होते हैं। यह सीवीड समुद्र तटों और तटरेखाओं के आसपास लगभग पूरी दुनिया में पाए जाते हैं।

इतना ही नहीं अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने ग्लोबल बायोस्फीयर मैनेजमेंट मॉडल का उपयोग करते हुए व्यावसायिक रूप से महत्वपूर्ण समुद्री सिवार की 34 से अधिक प्रजातियों का अध्ययन किया है और यह देखा है कि दुनिया के किन क्षेत्रों में इन सीवीड प्रजातियां के बढ़ने की सम्भावना है। जहां इनकी खेती की जा सकती है। वैश्विक स्तर पर सीवीड की खेती के लिए अनुकूल है समुद्र का 65 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र। इसके साथ ही वैज्ञानिकों ने भूमि उपयोग में बदलावों, ग्रीनहॉउस गैसों के उत्सर्जन, पानी और उर्वरकों के उपयोग के साथ 2050 तक प्रजातियों पर पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखते हुए कई परिदृश्यों में इसके पर्यावरण को होने वाले फायदों का अनुमान लगाया है।

वैश्विक स्तर पर समुद्र का करीब 65 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र समुद्री सिवार की खेती के लिए अनुकूल है। इसका ज्यादातर हिस्सा इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया में है, क्योंकि इन दोनों देशों के आर्थिक नियंत्रण में समुद्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा आता है। जानकारी मिली है कि इंडोनेशियाई ईईजेड में करीब 11.4 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र इस शैवाल की खेती के लिए उपयुक्त है। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया में भी समुद्र का करीब 7.5 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र इसके अनुकूल है।

मध्य प्रदेश के मिलेट, दाल, शरबती गेहूं और आलू के लिए भी लगाए जाएंगे स्टाल

जी-20 सम्मेलन कराएगा कृषि संस्कृति के दर्शन

इंदौर। जागत गांव हमार

भारत को पहली बार मिल रही जी-20 देशों के सम्मेलन की अध्यक्षता देश के लिए तो गर्व की बात है ही, यह मध्यप्रदेश और खासतौर पर इंदौर के लिए भी गौरव बनकर आ रहा है। इंदौर में 13, 14 और 15 फरवरी को जी-20 देशों की कृषि आधारित बैठकें होंगी, जिसमें देश और प्रदेश की कृषि संस्कृति के दर्शन कराए जाएंगे। साथ ही मध्य प्रदेश सहित देश के विभिन्न राज्यों की कृषि व वन संपदाओं को प्रदर्शित किया जाएगा। इंदौर में 13, 14 और 15 फरवरी को होंगी बैठकें, प्रशासन की तैयारियां अंतिम दौर में जी-20 की बैठक का आयोजन स्थल होटल शेरेटन ग्रैंड को बनाया गया है। कलेक्टर इलैया राजा टी का कहना है कि भारत सरकार द्वारा तय दिशा-निर्देशों के तहत जी-20 की बैठकों को लेकर प्रशासन हर स्तर पर तैयारी कर रहा है। देश के साथ ही इंदौर के लिए भी यह बड़ा अवसर है।

विशाल प्रदर्शनी में लगेंगे 29 स्टाल

- पांच स्टाल मध्यप्रदेश के रहेंगे, जिसमें प्रदेश की कृषि, पर्यटन, वन व आयुष, हस्तशिल्प एवं हथकरघा और जनजातीय कार्य विभाग की ओर से प्रदर्शनी लगाई जाएगी।
- प्रदेश के मंडला, डिंडोरी, सिंगरौली और अनूपपुर के मिलेट (कोदो, कुटकी आदि), नरसिंहपुर जिले के गाडरवाड़ा की अरहर दाल, विदिशा के शरबती गेहूं और इंदौर के आलू को प्रदर्शित किया जाएगा।
- मध्य प्रदेश के प्रमुख कृषि उत्पादों के साथ ही वन संपदा को भी प्रदर्शित किया जाएगा। इसमें वन और आयुष विभाग मिलकर प्रदेश में पाई जाने वाली शतावरी, सफेद मूसली आदि औषधियों के साथ ही मिलेट से बने उत्पादों के स्टाल लगाएंगे।
- वन्या संस्था द्वारा आदिवासियों द्वारा बनाए गए उत्पादों को भी प्रदर्शित किया जाएगा। हस्तकला, हस्तशिल्प एवं हथकरघा विभाग द्वारा प्रदेश की चंदेरी, महेश्वरी साड़ियों के साथ ही बाग और अन्य प्रिंट का शोकेस तैयार किया जाएगा।
- पर्यटन विभाग की ओर से पन्ना जिले के मंडला के कम्युनिटी क्राफ्ट सेंटर के उत्पाद और अलीराजपुर की आदिवासी महिलाओं द्वारा बनाए गए तीर-कमान और अन्य वस्तुएं प्रदर्शनी में रखी जाएंगी।
- आयोजन स्थल पर फार्मर कार्नर भी बनाया जाएगा। इसमें प्रदेश के कुछ किसान अपने आर्गेनिक और प्राकृतिक खेती से संबंधित उत्पाद रखेंगे। मिलेट के देसी बीज बचाने वाली डिंडौरी की महिला लहरीबाई, इंदौर के सिमरोल के किसान जितेंद्र पाटीदार सहित विदिशा, गुना के किसान तय किसान भी सम्मेलन में आमंत्रित किए गए हैं।

उपहार में देंगे भील पेंटिंग| डेलीगेट्स को उपहार में ओडीओपी प्रोडेक्ट दिए जाएंगे, जिसमें बाघ प्रिंट वाली बांस की चटाई, चंदेरी स्टोल्स, भील पेंटिंग और अन्य को चंदेरी टेबल रनर, टेबल मैट, कैंडल होल्डर देंगे।

ऑफिसर्स की ट्रेनिंग| कलेक्टर डॉ. इलैया राजा टी ने लाइजनिंग ऑफिसरों को ट्रेनिंग दी। ये ऑफिसर मेहमानों के देशों की संस्कृति के अनुरूप उनका ख्याल रहेंगे। एयरपोर्ट और होटल में हेल्प डेस्क भी बनेगी।

डबल पैंथर लाइन से बिजली| आयोजन स्थल पर बिजली वितरण कंपनी 33 केवी की डबल पैंथर लाइन से सप्लाय देगी।

इन चार थीम पर करेंगे चर्चा

खाद्य सुरक्षा एवं पोषण- कृषि विविधता, जैव किलेबंदी, मार्केट इंटेलिजेंस सिस्टम, खाद्य सुरक्षा एवं पोषण इंफ्रास्ट्रक्चर पर अतिथि मंथन करेंगे।

जलवायु- संसाधनों के कुशल उपयोग पर जागरूकता और कार्रवाई, एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल, कृषि अनुसंधान में निवेश, पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं का भुगतान।

खाद्य प्रणाली- समावेशी कृषि मूल्य शृंखला, बुनियादी ढांचे को मजबूत करना, प्रौद्योगिकी साझाकरण, छोटे किसानों, महिलाओं, युवाओं के लिए आर्थिक अवसर।

डिजिटलीकरण- कुशल कृषि बुनियादी ढांचे का विकास करना, पब्लिक गुड्स में ओपन एक्सेस एग्रीकल्चर डेटा प्लेटफॉर्म, डिजीटली सक्षम खाद्य प्रणाली।

सिंधिया करेंगे स्वागत

मुख्य कार्यक्रम का उद्घाटन सीएम शिवराज दोपहर 1.30 बजे करेंगे। 14 को केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया का स्वागत भाषण होगा।

सम्मेलन में आएंगे विभिन्न देशों के 100 डेलीगेट्स

जी-20 के सम्मेलन में जी-20 समूह के विभिन्न देशों सहित कुछ आमंत्रित देशों के लगभग 100 डेलीगेट्स शामिल होंगे। इनमें अर्जेंटीना, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चायना, जर्मनी, यूरोपियन यूनियन, फ्रांस, जर्मनी, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया, मैक्सिको, रूस, तुर्किये, यूके, यूएसए, स्पेन, इजिप्ट, नाइजीरिया, नीदरलैंड, सिंगापुर, सऊदी अरब, बांग्लादेश, मारीशस और ओमान के प्रतिनिधि शामिल रहेंगे। इनके अलावा विश्व बैंक, एशियन डेवलपमेंट बैंक और कुछ अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधि भी सम्मेलन में आएंगे।

तीन दिनी जैविक महोत्सव में मिलेट मैन ने कहा

किसानों से बीज का हक सीड कंपनियों ने छीना

इंदौर। जागत गांव हमार

इंदौर के ढक्कनवाला कुआं स्थित ग्रामीण हाट बाजार में जैविक महोत्सव के शुभारंभ हुआ। इसमें किसानों ने जैविक खेती के उत्पादों के स्टाल लगाए हैं। तीन दिवसीय महोत्सव के शुभारंभ समारोह में मिलेट मैन के नाम से प्रसिद्ध डॉ. खादर वली शामिल हुए। उन्होंने कहा कि मोटे अनाज में फाइबर की प्रचुर मात्रा होती है, इसका उपयोग खाने में करने से कैंसर, हृदयघात, मधुमेह जैसे रोगों को दूर किया जा सकता है। यदि मनुष्य पूरी तरह से शाकाहारी हो जाए और गेहूं, चावल एवं दूध का सेवन पूरी तरह से बंद कर दे, तो बिना दवाओं के लंबे समय तक स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है। डॉ. वली ने कहा कि हरित क्रांति के नाम पर डायबिटीज और श्वेत क्रांति के नाम पर थायराइड की बीमारी लोगों को लगा दी गई। हरित क्रांति ने हमारी सबसे खास फसल बाजरा को हमसे दूर कर दिया। देशी आहार को हटाकर हमारी थाली में चावल, गेहूं के रूप में कारपोरेट अनाज परोसा जा रहा है। हरित क्रांति के नाम पर देश की कृषि में बिजनेस घुसा दिया गया है। पेस्टीसाइड कृषि पद्धति नहीं, व्यापार का प्रकार है। इसके कारण देश में अस्पतालों की संख्या कम होने की अपेक्षा बढ़ती जा रही है।

मोटे अनाज को उगाना होगा

डॉ. वली ने बताया कि आदिकाल से हमारे किसान ही बीज बनाते थे, लेकिन आज किसानों से बीज का हक सीड कंपनियों ने छीन लिया है। किसानों से बीज खरीदकर अपना टैग लगाकर वही बीज किसानों को ही उच्च ग्रेड का बताकर बेचा जा रहा है। बीमारी के बिना जीवन जीना है, तो मोटे अनाज को उगाना होगा और उनका उपभोग भी करना जरूरी है। मोटे अनाज हमारे भोजन का अहम हिस्सा हैं। मोटे अनाज में पानी का कम उपयोग होता है और बंजर भूमि को भी उपजाऊ बनाया जा सकता है। इनके सेवन से कैंसर, मधुमेह, बीपी, हृदयघात जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है।

जैविक खेती की ओर लौटना होगा

आज मोटे अनाज में दुनिया आरोग्य देख रही है। इसलिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को मोटे अनाजों का वर्ष घोषित किया है। विश्व के कई देश अब मोटे अनाज उगा रहे हैं। भारत में भी इसका दायरा बढ़ता जा रहा है। स्वस्थ रहने के लिए मोटे अनाज के साथ ही जैविक खेती की ओर लौटना होगा।

-कृषि मंत्री कमल पटेल ने कहा

मध्यप्रदेश में विकास का पहिया अनवरत घूमेगा

भोपाल। जागत गांव हमार

किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री कमल पटेल ने कहा कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। विकास का पहिया अनवरत घूमेगा, यह रुकने वाला नहीं है। कृषि मंत्री ने हरदा जिले के अबगांवखुर्द में 7 करोड़ 99 लाख रुपए की लागत से बनने वाले हरदा आदर्श महाविद्यालय भवन का भूमि-पूजन कर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। मंत्री पटेल ने विकास यात्रा में विभिन्न निर्माण कार्यों का लोकार्पण भी किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार गांव-गरीब-किसानों के लिए कृत-संकल्पित होकर कार्य कर रही है। मंत्री ने अबगांवखुर्द में मुकेश, रामबक्श, रामकृष्ण और प्रेमबाई को वृद्धावस्था पेंशन के स्वीकृति-पत्र वितरित किए। प्रियंका और जावेद आयुष्मान कार्ड तथा नवल सिंह को पात्रता-पर्ची दी। मंत्री पटेल ने ग्राम डगावानिमा पंचायत के ग्राम जिजगाँव कला में भी ग्रामीणों को संबोधित किया और योजनाओं एवं विकास कार्यों की जानकारी दी। विकास यात्रा में बृजेन्द शर्मा एवं जन-प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

किसान, गोबर और गौ-मूत्र से बनाएं खाद

किसान-कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री कमल पटेल ने किसानों से गौ-मूत्र और गोबर से खाद बना कर खेतों में उपयोग करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सपने को पूरा करने के लिये हम सभी को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका निभानी होगी। मंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती हम सभी के लिए लाभदायक है। उन्होंने बारंगा में अपने खेत पर गोबर और गौ-मूत्र से खाद भी बनाया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मध्यप्रदेश के किसान प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। मंत्री ने भी अपने खेत में प्राकृतिक खेती प्रारंभ की है। वे गोबर, गौ-मूत्र, मिट्टी, बेसन, वनस्पति और गुण से जीवामृत बना रहे हैं। मंत्री ने बताया कि इसे बनाने में लागत भी कम आती है। कोरोना के बाद दुनिया में प्राकृतिक उत्पाद की मांग बढ़ी है।

पशुपालन मंत्री ने किया 23 विकास कार्यों का लोकार्पण

भोपाल। पशुपालन एवं डेयरी मंत्री प्रेमसिंह पटेल ने प्रभार के जिले बुरहानपुर में विकास यात्रा के दौरान ग्राम निंबोला में एक करोड़ 39 लाख रुपए से अधिक के 23 विकास कार्यों का लोकार्पण और 2 करोड़ 10 लाख रुपए लागत के निर्माण कार्यों का भूमि-पूजन किया। मंत्री पटेल ने लोगों को स्वच्छता की शपथ दिलाई और हितग्राहियों को हितलाभ भी वितरित किए। नेपानगर विधायक सुमित्रा कासडेकर भी मौजूद थीं। मंत्री ने लोगों से अपील की कि शासन की जन-कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अवश्य उठाएं। उन्होंने प्रशासन से हितग्राहियों की सूची मांगी। उन्होंने कहा कि जिले में आयुष्मान कार्ड बनाए जा रहे हैं। चिन्हित स्थानों पर दिव्यांग शिविर हों। पात्र हितग्राही मुख्यमंत्री भू-अधिकार आवासीय योजना में आवेदन दें। हितग्राही शिविरों का लाभ उठाएं। कलेक्टर भव्या मित्तल ने बताया कि दस्तक अभियान और प्रोजेक्ट मुस्कान में जिला अपने लक्ष्य प्राप्ति के बहुत करीब है।

लगाया आम का पौधा

मंत्री ने विकास यात्रा के दौरान ग्राम निंबोला में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र का निरीक्षण भी किया। उन्होंने ओपीडी, वैक्सीनेशन कक्ष, मेटरनिटी कक्ष का अवलोकन करने के साथ स्टाफ और मरीजों से भी संवाद किया। सामाजिक न्याय मंत्री ने निरीक्षण के बाद परिसर में आम और नींबू के पौधे रोपित किए।

फसलों को कीट-व्याधियों से बचाने वैज्ञानिकों ने दी सलाह

दलहन-तिहलन वाली फसलों में रोग और कीट लगाने की आशंका

टीकमगढ़। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञानं केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, वैज्ञानिक डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. यूएस धाकड़, डॉ. एसके सिंह, डॉ. एसके जाटव, डॉ. आईडी सिंह एवं जयपाल छिगारहा द्वारा शीत लहर से फसलों एवं सब्जियों में कीट-व्याधियों एवं पाला से बचाव के लिए तकीनीकी सलाह सलाह दी जा रही है। बदलते मौसम में आलू-टमाटर समेत सब्जियों वाली फसलों और दलहन-तिहलन वाली फसलों में रोग और कीट लगाने की आशंका बढ़ जाती है। मौसम में बदलाव के चलते शीत लहर और ठंडी हवाओं के चलने के साथ ही रबी की फसलों में झुलसा और पाला पड़ने की संभावना बढ़ जाती है, ऐसे में किसान कुछ बातों का ध्यान रखकर नुकसान से बच सकते हैं। शीत लहर और पाले का फसलों और फलदार वृक्षों की उत्पादकता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। फूल आने और बालियां/फली विकसित होने के दौरान फसलों के पालाग्रस्त होने की सबसे अधिक संभावना होती है। पाले के प्रभाव से पौधों की पत्तियां एवं फूल झुलसने लगते हैं। जिससे फसल प्रभावित होती है। कुछ फसलें बहुत अधिक तापमान या पाला सहन नहीं कर पाती हैं, जिससे उनके खराब होने का खतरा रहता है। यदि पाले के समय फसल की देखभाल न की जाए तो उस पर आने वाले फल या फूल झड़ सकते हैं। जिससे पत्तियों का रंग मिट्टी के रंग जैसा हो जाता है। यदि शीत लहर हवा के रूप में चलती रहती है तो इससे कोई नुकसान नहीं होता है, लेकिन यदि हवा रुक जाती है तो पाला पड़ता है, जो फसलों के लिए अधिक हानिकारक होता है। पाले से सबसे ज्यादा नुकसान मटर, सरसों, धनिया के साथ मिर्च और बैंगन की फसल को होता है ठंड के कारण सब्जियों के पौधे काले पड़ जाते हैं। लेकिन कुछ उपायों से किसान ठंड के कारण अपनी फसल को खराब होने से बचा सकते हैं।

प्रतिदिन खेती की निगरानी की जाए

पाले के दिनों में मिट्टी की जुताई या जुताई नहीं करनी चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से मिट्टी का तापमान कम हो जाता है। फसल बचाने के लिए सबसे जरुरी है कि प्रतिदिन खेती की निगरानी की जाए। अगर पौधे के पत्ते में रोग दिखाई दें, तुरंत उन्हें उखाड़कर जमीन में दबा दें। वो कहते हैं, ज्यादा रोग दिखे तुरंत विशेषज्ञों की सलाह लें और एहतियातन एक फफूंद नाशक का छिड़काव कार्बेंडाजिम मैनकोज़ेब या फिर मेटालैक्सिल और मैंकोजेब का छिड़काव कर दें। आलू की फसल में झुलसा के लिए अनुकूल मौसम है तो इन फंगीसाइड का 2 ग्राम प्रति लीटर में छिड़काव जरूर कर दें। सरसों की फसल में सफेद पत्ती धब्बा जो रोग लगता है उसमें 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव का छिड़काव कर सकते हैं।

सब्जियों में लग रहा झुलसा रोग

कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख और पादप रक्षा वैज्ञानिक डॉ. आरके प्रजापति बताते हैं, ये मौसम ही कीट और रोग लगने का है। मौसमी परिस्थितियां ऐसी हैं कि रोग और कीट बढ़ने के लिए अनुकूल है। आलू-टमाटर समेत दूसरी सब्जियों में झुसला रोग लग सकता है, पत्तियों के मुड़ने की प्रक्रिया, यानी रस चूसक भुनगे बहुत तेजी से लगेंगे। कोशिश करें नीम ऑयल का छिड़काव करें, कंडे की राख का इस्तेमाल करें। येलो स्टिकी ट्रैप लगा लें और रोग वाले पौधों को दबा दें।

थ्रिप्स का प्रकोप तेजी से बढ़ेगा

दलहनी फसलों की बात करें तो चना, मटर, मसूर में जीवाणु झुलसा रोग, उकठा रोग, चने में फली छेदक कीट अंडे दे रहे होंगे, सरसों की बात करें तो माहू है सफेद मक्खी है, थ्रिप्स का प्रकोप तेजी से बढ़ेगा नर्सरी के पौधों और सब्जियों की फसलों को बोरियों, पॉलिथीन या पुआल से ढक देना चाहिए। क्यारियों के किनारों पर हवा को रोकने के लिए बाड़ को हवा की दिशा में बांधकर फसल को पाला एवं शीत लहर से बचाया जा सकता है। पाले की संभावना को ध्यान में रखते हुए ज़रुरत पड़ने पर खेत की सिंचाई कर देनी चाहिए। इससे मिट्टी का तापमान कम नहीं होता है।

घोल का छिड़काव करना चाहिए

सरसों, गेहूं, चावल, आलू, मटर जैसी फसलों को पाले से बचाने के लिए सल्फ्यूरिक अम्ल (गंधक का तेजाब) के छिड़काव से रासायनिक सक्रियता बढ़ती है। पाले से बचाव के अलावा पौधे को लौह तत्व भी प्राप्त होता है। दीर्घकालीन उपाय के रूप में फसलों की सुरक्षा के लिए शहतूत, शीशम, बबूल, खेजड़ी और जामुन आदि जैसे वायु अवरोधक वृक्षों को खेत की मेड़ों पर लगाना चाहिए, जो फसल को पाले और शीत लहरों से बचाते हैं। 500 ग्राम थायोयूरिया को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव किया जा सकता है और 15 दिनों के बाद दोबारा छिड़काव करना चाहिए। क्योंकि सल्फर (गंधक) पौधे में गर्मी पैदा करता है, इसलिए प्रति एकड़ 8-10 किलो सल्फर डस्ट डाला जा सकता है।

-किसानों के खेत में पहुंचे कृषि वैज्ञानिक

रोग कीट सर्वेक्षण और निदान के दिए सुझाव

नरसिंहपुर। जागत गांव हमार

कृषि विज्ञान केन्द्र नरसिंहपुर के पादप संरक्षण वैज्ञानिक डॉ. एसआर शर्मा द्वारा गोटेगांव विकासखण्ड के अतंर्गत लगाए गए। चना,मसूर, गेहूं, मटर, सरसों, आलू एवं गन्ना फसल का निरीक्षण किया गया। करकबेल के कृषक नारायण पटेल के यहॉ गर्मी के समय में सोयाबीन की बुआई की गयी है। सोयाबीन में कहीं-कंही जड़ सड़न रोग का आशिंक आपतन देखा गया जिसके निराकरण के लिए थाओफिनेट मिथारॉन 350-400 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी के साथ छिड़कांव की संस्तुति की गयी। चना फसल में उकठा रोग का आपतन देखा गया तथा किसी किसी खेत में आपतन ज्यादा पाया किसान को टेबूकोनोजोल प्लस सल्फर 400 ग्राम प्रति एकड़ छिड़कांव के लिए सुझाव दिया गया। सरसों व मसूर की फसल में माहू का प्रकोप पाया, इसके नियत्रंण के लिए थाओमेथाक्साम 80-100 ग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़कांव की संस्तुति की गयी। आलू की फसल में विगत सप्ताह कम तापमान एवं बादल होने के कारण अगेती झुलसा रोग का प्रकोप देखा गया है जिसके नियंत्रण के लिए मेंकोजेब 3 ग्राम/लीटर पानी की दर से 600 ग्राम/एकड़ छिडकांव के लिए सुझाव दिया गया। जबकि गन्ना एवं गेहूं की फसल में कोई नुकसान नहीं पाया गया है।

औषधीय-सगंधीय पौधों की खेती प्रसंस्करण पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण

भोपाल। मध्य प्रदेश में औषधीय सगंधीय पौधों की खेती, प्रसंस्करण और विपणन संभावनाओं पर उद्यमिता विकास केंद्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) द्वारा 05 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यह प्रशिक्षण पूरी तरह से अरहवासी रहेगा, जो 13 से 17 फरवरी तक उद्यमिता भवन, 16-ए अरेरा हिल्स भोपाल में आयोजित किया जाएगा। इच्छुक व्यक्ति 10 फरवरी 2023 तक आवेदन कर सकते हैं। सेडमैप के वरिष्ठ प्रशिक्षक डॉ. वेद प्रकाश सिंह ने बताया कि जो भी व्यक्ति औषधीय सगंधीय पौधों की खेती, प्रसंस्करण और विपणन में रूचि रखते हैं वे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलित हो सकते हैं। प्रशिक्षण के इच्छुक व्यक्ति मोबाइल नंबर 9425386409, 9479935845 या ईमेल पर सम्पर्क कर सकते हैं। प्रशिक्षण में सम्मिलित होने के लिए पूर्व पंजीयन कराया जाना आवश्यक है। पंजीयन फार्म सेडमैप की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

आगामी वर्ष तक अमल में आ जाएगी वन अमले की कार्ययोजना

सरदार सरोवर डूब क्षेत्र में भी आबाद होंगे कूनों के अफ्रीकी चीते

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रदेश के सरदार सरोवर डूब क्षेत्र में अफ्रीकी चीतों को आबाद किया जाएगा। यह प्रदेश के कूनों अभ्यारण्य से भेजे जाएंगे। अफ्रीकी से लाये गए चीतों की नस्ल को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से वन्य प्राणी कार्यालय यह पहल की गई है। इसके लिए गुजरात की सीमा से सटे अलीराजपुर के मथवाड़ क्षेत्र का चयन किया गया है। यह नौरादेही और कूनों के बाद करीब 200 वर्गमील क्षेत्रफल में फैला तीसरा अभ्यारण्य होगा। इस क्षेत्र को अभ्यारण्य और अफ्रीकी चीतों के अनुरूप विकसित करने की योजना को अमली जामा पहनाने की कवायद वन विभाग ने शुरू कर दी है। हालांकि रिपोर्ट स्टेट फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट जबलपुर की पहल पर वन्यप्राणी रहवास विकास संगठन की सिफारिश पर यह काम वर्ष 2016 से शुरू हो गया था, लेकिन कूनों में अफ्रीकी चीतों की बसाहट के बाद आगामी एक वर्ष में इसको पूरा करने की योजना है। लिहाजा परियोजना को अमली जामा पहनाने के लिए मैदान स्तर पर काम तेज कर दिया गया है। वजह यह भी है कि इसके कारण करीब 10 गांव प्रभावित हो रहे हैं। इनमें आधे वनाधिकार कानून के दायरे में है। वहीं पर्यटन और विकास संभावनाओं को देखते हुए इनमें हर्ष है।

इसलिए नौरादेही का नहीं किया गया चयन- चीतों की बसाहट के लिए सबसे पहले सागर और नरसिंहपुर जिले में बने नौरादेही अभयारण्य का चयन किया गया था। बावजूद इसके मुरैना स्थित कूनों के चलते इसको लंबित कर दिया गया। वजह यह भी रही कि इसके बाडबंदी के लिये आवश्यक राशि का प्रबंध नहीं हो पाया। क्योंकि आयाताकार क्षेत्र में चिंहित इस क्षेत्र में चीतों को सुरक्षित रखने बाड़बंदी के लिए विभाग को करीब डेढ़ सौ करोड़ रुपए की आवश्यकता बनी हुई है। जबकि नए क्षेत्र के रूप में चिंहित मथवाड़ क्षेत्र के मामले में यह समस्या नहीं आने वाली है।

इसलिए चुना गया मथवाड़| विभागीय अधिकारियों की माने तो यह क्षेत्र प्राकृतिक रूप से समृद्ध है। यहां जंगली जानवरों की भरपूर पर्याप्तता है। जिसमें भालू, हिरन, जंगली भैसे, खरगोश और तेंदुआ प्रमुख रूप से शामिल है। चूंकि इसका अधिकांश हिस्सा मैदानी है और चीतों के लिये जरूरी माने जाने वाले हिरणों की बहुलता भी है। इसलिए चीतों को प्राकृतिक रूप से जानवरों की उपलब्धता रहेगी। इसलिए पहले चरण में 8 चीतों को भेजने की योजना है। भविष्य में समय की जरूरत अनुसार बदलाव भी किया जा सकता है।

5 साल तक चीते आते रहेंगे

भारत सरकार के साथ समझौते के तहत आगामी 4-5 साल तक अफ्रीका से चीतों की आवक देश में बनी रहेगी। पहली खेप में 8 चीतों के आने के बाद फिर 12 चीते लाये जा रहे हैं। वन्यप्राणी विभाग की माने तो यह क्रम फिलहाल जारी रहेगा। क्योंकि पर्यावरणीय अनुकूलता के लिए जानवरों को समय चाहिए। इसलिए मप्र के अलावा भी देश के अलग-अलग राज्यों में इनको बसाने की योजना प्रस्तावित है।

- प्रदेश के सरदार सरोवर क्षेत्र में चीतों की बसाहट का प्रस्ताव है। इस पर काम भी शुरू हो गया है। प्राकृतिक जलवायु अनुकूलता के दृष्टिगत चीतों को संरक्षित पयावजस और वन्यजीव की विविधता को सुरक्षित रखना इसका उद्देश्य है।

जसबीर सिंह चौहान, प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यप्राणी, मप्र

पशुपालन विभाग के पूर्व उप संचालक डॉ. जैन ने किया आह्वान

प्राकृतिक खेती के साथ पशुओं का संरक्षण समय की जरूरत

शिवपुरी। जागत गांव हमार

जिले के कृषि विज्ञान केन्द्र पिपरसमां शिवपुरी पर एक दिवसीय विभागीय एवं मैदानी कार्यकर्ताओं के लिए ओरिऐन्टेशन सह कार्यशाला 'प्राकृतिक खेती एवं मिलेट्स' फसलों के प्रोत्साहन पर आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ मां सरस्वती का पूजन और दीप प्रज्वलित कर डॉ. एमपी जैन पूर्व उपसंचालक पशुपालन द्वारा किया गया। कार्यक्रम में जिले के कृषि, कृषि तकनीकी प्रबंधन समिति (आत्मा), उद्यानिकी, पशुपालन, मत्स्य, आजीविका मिशन एवं शक्तिशाली महिला संगठन समिति के मैदानी कार्यकर्ताओं सहित 50 से अधिक प्रतिभागी उपस्थित रहे। विशेषकर शिवपुरी जिले में नये ज्वाइन हुए समस्त ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी भी उपस्थित रहे। कार्यशाला के स्वागत और उद्घाटन सत्र में डॉ. एमपी जैन ने अनुभव साझा करते हुए नवनियुक्त ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों को क्षेत्र में परिश्रम, निष्ठाभाव और कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण के बारे में बतलाते हुए खेती और पशुधन का पूर्ण संयोजन को आज भी जरूरी है के बारे में समझाते हुए कृषि कि समय-समय पर उन्नत और नवीन तकनीकियों को क्षेत्र में विस्तार के माध्यम से उपयोगकर्ता, किसानों/ किसान महिलाओं तक पहुंचाने के लिए विशेष जोर दिया। जिससे कृषि का संतुलन और संवर्गीण विकास से रोजगार परख उद्यम भी बड़े सके।

कृति तकनीकि का करें फैलाव

केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. पुनीत कुमार के द्वारा कार्यशाला का महत्व एवं क्षेत्र में उपयोगिता की जानकारी देते हुए कृषि तकनीकियों के अधिक से अधिक क्षेत्र में फैलाव करने के लिए आह्वान किया। डॉ. एमके भार्गव वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं नोडल अधिकारी प्राकृतिक कृषि ने जिले मे प्राकृतिक खेती परीक्षण/ प्रदर्शन के बारे में बतलाते हुए प्राकृतिक खेती की अवधारणा एवं परिचय पर किसानों से चर्चा की गई।

प्राकृतिक खेती के बारे में समझाया

जिले के उपसंचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास यूएस तोमर ने नवागत विभागीय अधिकारियों एवं अन्य सभी को जिले के प्रसार कार्यकर्ताओं से नवीन तकनीकियों के प्रसार और प्राकृतिक खेती के बारे में बतलाए जाने के बारे में समझाया गया। कार्यक्रम सहायक संचालक उद्यान सुरेश सिंह कुशवाह भी उपस्थित रहे। रवि गोयल निदेशक ने पोषण और कृषि अनाजों/पोषण वाटिका की भूमिका पर प्रकाश डाला।

बीज किट प्रदान की

कार्यशाला सह आरिएंटेशन कार्यक्रम के अंतिम सत्र में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा तकनीकी साहित्य एवं बीज किट प्रदाय करते हुए केन्द्र पर बनाई गई नवीन प्राकृतिक खेती इकाई एंव डाले गए प्रदर्शनों के साथ अन्य तकनीकी प्रदर्शनों/इकाइयों का भ्रमण कराया गया तथा जिज्ञाषाओं का समाधान करते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र की टीम ने विषयानुसार समय-समय पर तकनीकी सुझाव एवं फीडबेक दिये जाने के साथ प्राकृतिक खेती एवं मिलेट्स कार्यशाला कार्यक्रम समपन्न हुई।

उत्पादन के बारे में दी जानकारी

केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह के द्वारा वर्तमान वर्ष 2023 जो अतंराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के रूप में मनाई जा रही है। इस परिपेक्ष्य में मिलेट्स फसलों के परिचय, महत्व, पोषण गुणवत्ता तथा उत्पादन के बारे में जानकारी दी गई। कृषि अभियांत्रिकी वैज्ञानिक डॉ. एएल बसेड़िया ने कृषि में श्रम कम करने की तथा संसाधन, संरक्षण तकनीकियों के बारे में बतलाते हुए क्षेत्र में प्रसार कराए जाने के लिए भी कहा गया। योगेश चन्द्र रिखाड़ी विशेषज्ञ मत्स्यपालन ने खेती के समन्वय माडल में मत्स्य संपदा को भी क्षेत्र की उपयोगिता अनुसार जोड़ने और लाभ लिए जाने के लिए तकनीकियों पर प्रकाश डाला। डॉ. नीरज कुमार कुशवाहा विशेषज्ञ ने कृषि वानिकी द्वारा बदलते परिवेश में भूमि, वन, कृषि और प्राकृतिक संसाधनों के कुशल समन्वय एवं क्षमतापूर्ण दोहन किए जाने पर जानकारी दी गई।

-पंजीयन की कार्रवाई पोर्टल पर 25 फरवरी तक होगी

चना, मसूर एवं सरसों के उपार्जन का पंजीयन ई-उपार्जन पोर्टल पर

भोपाल। जागत गांव हमार

अपर मुख्य सचिव किसान-कल्याण तथा कृषि विकास अशोक वर्णवाल ने बताया है कि रबी वर्ष 2022-23 (विपणन वर्ष 2023-24) में चना, मसूर एवं सरसों के उपार्जन के लिए पंजीयन की कार्यवाही ई-उपार्जन पोर्टल पर की जा रही है, जो 25 फरवरी 2023 तक चलेगी। केन्द्र सरकार की प्राइस सपोर्ट स्कीम में रबी फसलों के उपार्जन के लिये आवश्यक निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

मसूर का उपार्जन 37 जिलों में होगा- समर्थन मूल्य पर मसूर का उपार्जन 37 जिलों राजगढ़, सतना, डिंडोरी, विदिशा, सागर, रीवा, नरसिंहपुर, दतिया, रायसेन, पन्ना, दमोह, मंडला, जबलपुर, शाजापुर, अनूपपुर, सिवनी, अशोकनगर, कटनी, मंदसौर, आगर, सीधी, सिंगरौली, सीहोर, छतरपुर, उमरिया, शिवपुरी, शहडोल, होशंगाबाद, भिंड, उज्जैन, छिंदवाड़ा, टीकमगढ़, रतलाम, बैतूल, नीमच, हरदा और धार में किया जाएगा।

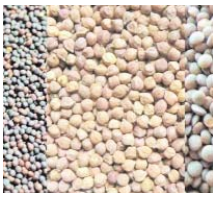

सरसों का उपार्जन होगा 39 जिलों में

समर्थन मूल्य पर सरसों का उपार्जन प्रदेश के 39 जिलों भिंड, मुरैना, शिवपुरी, मंदसौर, श्योपुरकलां, ग्वालियर, बालाघाट, टीकमगढ़, छतरपुर, नीमच, डिंडोरी, मंडला, दतिया, रीवा, सिंगरौली, आगर, गुना, पन्ना, रतलाम, सतना, अशोकनगर, शहडोल, विदिशा, राजगढ़, सिवनी, अनूपपुर, सीधी, जबलपुर, शाजापुर, कटनी, उज्जैन, उमरिया, रायसेन, सागर, होशंगाबाद, दमोह, छिंदवाड़ा, बैतूल और हरदा में होगा।

-राज्य मंत्री ने ग्रामीणों से किया सीधा संवाद

गांव में हुए विकास कार्यों का दिया ब्यौरा

भोपाल। उद्यानिकी एवं खाद्य प्र-संस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भारत सिंह कुशवाह ने ग्राम विकास यात्रा में ग्रामों में पहुंच कर ग्रामीणों को विकास कार्यों की जानकारी दी। उन्होंने गांव में हुए विकास कार्यों का ब्यौरा ग्रामीणों के समक्ष रख कर शासन की योजनाओं के संबंध में बताया। राज्य मंत्री कुशवाह ने ग्वालियर जिले के ग्राम लक्ष्मणगढ़ में 52 लाख रूपये के, ग्राम बरैठा में 35 लाख रुपए के, ग्राम गुठिना में 36 लाख 97 हजार के, ग्राम फूलपुरा में 45 लाख 42 हजार के और ग्राम अड़ूपुरा में 48 लाख 18 हजार के विकास कार्यों का भूमि-पूजन एवं लोकार्पण किया। राज्य मंत्री ने ग्रामों में विभिन्न योजनाओं में लाभान्वित हितग्राहियों को स्वीकृति-पत्र भी वितरित किए। विकास यात्रा में जनपद पंचायत मुरार अध्यक्ष दिलराज किरार सहित जन-प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

किसानों को दी उचित सलाह

प्रशिक्षण में वैज्ञानिकों ने बताया प्राकृतिक खेती के फायदे

छतरपुर। कृषि विज्ञान केंद्र नौगांव, छतरपुर में सागर जिले से आत्मा परियोजना अंतर्गत राज्य के अंदर कृषक प्रशिक्षण/भ्रमण कार्यक्रम के तहत निधि पांडे (विकासखंड तकनीकी प्रबंधक) एवं कल्पना जैन (सहायक तकनीकी प्रबंधक) द्वारा भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती के अंतर्गत प्रशिक्षण का आयोजन किया गया और डॉ कमलेश अहिरवार वैज्ञानिक (उद्यानिकी) के द्वारा प्राकृतिक खेती अपनाने से क्या-क्या फायदे हैं उसके बारे में विस्तार से अवगत कराया और बताया कि प्राकृतिक खेती स्वास्थ्य की दृष्टि से बहुत ही उपयोगी साबित होगी। साथ ही जैविक खाद बनाने की

विधियों के बारे में भी विस्तार से बताया गया तथा अतर सिंह (एग्रोमैट ऑब्जरवर) द्वारा भी सभी कृषकों को प्राकृतिक खेती अपनाने हेतु प्रेरित किया। सभी कृषकों के कृषि विज्ञान केंद्र के परिसर में प्रदर्शित इकाईयां जैसे नर्सरी इकाई, उद्यानिकी फसल संग्रहालय इकाई ,औषधीय इकाई, फल उद्यान इकाई एवं जैविक खाद की इकाइयों का भ्रमण भी कराया गया।

रीवा के किसानों को किया जागरुक

वैज्ञानिकों ने किया फसलों का निरीक्षण

रीवा। कृषि विज्ञान केंद्र रीवा मप्र के प्रमुख डॉ. एके पांडेय के निर्देशन में ग्राम नौढ़ीया में कृषक प्रशिक्षण के साथ साथ सरसों मसूर चना अरहर गेहूं अलसी और प्याज की फसलों का निरीक्षण वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र के पौध संरक्षण वैज्ञानिक डॉ. अखिलेश कुमार, डॉ. स्मिता सिंह सस्य वैज्ञानिक एवं मृदा वैज्ञानिक अखिलेश पटेल द्वारा रबी की फसलों में संतुलित खाद का प्रयोग, उचित सिंचाई प्रबंधन, प्याज और सब्जियों की फसलों एवम पौधशाला में प्रबंधन, गेहूं, जौ एवम प्याज की फसलों में खरपतवार, पोषक तत्व एवम कीट एवम रोग प्रबंधन, स्वच्छता प्रबंधन पर कृषकों को प्रशिक्षण दिया गया। जिसमे बताया गया कि चने में इल्ली का प्रकोप होने पर इंडोक्साकार्ब 15.8 ईसी की 500 मिली मात्रा प्रति हेक्टेयर और सरसो, मसूर में माहों और प्याज में थ्रिप्स कीट के प्रकोप होने पर पीली चिपचिपी पट्टी और थियोक्लोप्रिड की 8 मिली मात्रा प्रति टंकी में मिलाकर शाम को छिड़काव करें। इस अवसर गांव के प्रगतशील कृषक उपस्थित थे।

13 दिन में 435 किलोमीटर का सफर तय करते हुए सर्वे टीम करेगी जलीय जीवों की गणना

जलीय जीवों की गणना के लिए चंबल में उतरी सर्वे टीम

श्योपुर। जागत गांव हमार

चंबल नदी में पल रहे घडियालों का कुनबा इस साल घटा है या बढ़ा। मगरमच्छ सहित अन्य जलीय जीवों की संख्या में कितनी बढ़ोत्तरी हुई है। अब इसका पता जल्द चल जाएगा। कारण यह है कि चंबल नदी में जलीय जीवों की गणना शुरू हो गई है। इसकी शुरुआत 9 फरवरी चंबल नदी के पाली घाट से हुई थी। जलीय जीवों की गणना चंबल नदी के चकरनगर घाट तक होगी। उल्लेखनीय है कि चंबल अभयारण्य ने पाली घाट से चकरनगर (इटावा) तक बह रही चंबल में जलीय जीवों की गणना का काम 9 फरवरी को पाली घाट से से शुरू किया था। यह सर्वे 21 फरवरी तक चलेगा। इस दौरान सर्वे करने के लिए चंबल नदी में उतरी सर्वे टीम 13 दिन में 435 किलोमीटर का सफर तय करते हुए डायरेक्ट साइटिंग प्रणाली से जलीय जीवों और प्रवासी प्रक्षियों की गणना करेगी। इस गणना के दौरान यह पता चल जाएगा कि चंबल नदी में जलीय जीवों की संख्या कितना हो गई है।

इन घाटों से होकर होगा सर्वे

चंबल अभयारण्य में वर्ष 1984 से हर घड़ियाल व अन्य जलीय जीवों मगर, डॉल्फिन आदि की गणना की जाती है। इसमें सर्वे टीम डायरेक्ट साइटिंग (प्रत्यक्ष दिखना) से टीम के अलग-अलग सदस्य घड़ियाल, मगर, डॉल्फिन की काउंटिंग करते हैं। इसके अलावा अन्य जलीय जीवों का आंकलन भी किया जाता है। सर्वे टीम पाली घाट, रामेश्वर, बरोली, अटार घाट, बटेसुरा, सरसेनी, राजघाट, कुथियाना, उसैद घाट, अटेर, बरही, सहसों और पचनदा तक सर्वे करेगी।

सर्वे टीम में विशेषज्ञ शामिल

जलीय जीवों का सर्वे करने के लिए चंबल नदी में उतरी टीम में जो विशेषज्ञ है, उनमें अभयारण्य के देवरी केंद्र के केयर टेकर ज्योति डंडोतिया, प्रोजेक्ट कॉर्डिनेटर आमिर खान, भारतीय वन्यजीव संस्थान देहरादून के विकास शर्मा, वाइल्ड लाइफ कंजर्वेशन ट्रस्ट के रिसर्चर तरुण नायर, बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी की साइंटिस्ट परवीन शेख शामिल हैं।

अब तक गणना में मिले घड़ियाल

वर्ष	घड़ियाल
2016	1162
2017	1255
2018	1681
2019	1876
2020	1859
2021	2176
2022	2114

4 सदस्यीय दल रवाना, केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर-सीएम शिवराज नामीबिया से आए चीतों को बाड़े में छोड़ेंगे

18 को दक्षिण अफ्रीका से कूनो में अभ्यारण्य आएंगे 12 चीता

भोपाल। प्रधान संपादक

दक्षिण अफ्रीका से 12 चीता 18 फरवरी को भारत आ जाएंगे। इन्हें लेने के लिए एनटीसीए के आईजी अमित मलिक के नेतृत्व में चार सदस्यीय दल शनिवार को दिल्ली से दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हो गया है। दक्षिण अफ्रीका पहुंचने के बाद दल सदस्य फिंडा और रुडबर्ग क्षेत्र में क्वारंटीन रखे गए चीतों को देखेगा और जरूरी परीक्षण कराएगा। इसके बाद चीतों को लाने की तैयारियों को अंतिम रूप दिया जाएगा जिसमें क्वारंटीन बाड़ों से चीतों को कैज में बंद कर एयरपोर्ट तक पहुंचाना शामिल है। 12 चीतों में 7 नर और 5 मादा चीते शामिल हैं जिन्हें भारत लाया जा रहा है। यह चीते दक्षिण अफ्रीका के बाड़ों में सात माह से क्वारंटीन हैं।

चीते लेने दिल्ली से साउथ अफ्रीका के लिए एक्सपर्ट टीम रवाना

शिवराज भी होंगे शामिल

17 फरवरी की शाम को चीतों के लेकर प्लेन भारत के लिए उड़ान भरेगा। 18 फरवरी की सुबह 10-11 बजे तक चीता कूनो नेशनल पार्क पहुंचेंगे। यहां पर चीतों को क्वारंटीन बाड़ों में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय वन मंत्री भूपेंद्र यादव के साथ ही प्रदेश के वन मंत्री विजय शाह द्वारा रिलीज किया जाएगा। चीतों को कूनो नेशनल पार्क में 18 फरवरी को सुबह 11-12 बजे के आसपास रिलीज किया जाएगा।

'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए महिला समूह' पर राष्ट्रीय सम्मेलन

जबलपुर। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), हैदराबाद ने जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्व विद्यालय (जेएनकेवीवी), जबलपुर और परियोजना निदेशक एटीएमए (आत्मा) जबलपुर के सहयोग से एक दिवसीय 'खाद्य और पोषण सुरक्षा के लिए महिला समूह पर राष्ट्रीय सम्मेलन' 9 फरवरी 202 को आयोजन किया। भारत इस वर्ष जी-20 शिखर सम्मेलन की प्रतिष्ठित अध्यक्षता की मेजबानी कर रहा है, जहां 200 विषयों में से एक विषय महिला नेतृत्व विकास है। महिला समूहों जैसे एसएचजी, एफपीओ, सीएनजी, डब्ल्यूएफएसजी आदि की राष्ट्रीय खाद्य और पोषण सुरक्षा में योगदान करने की बड़ी भूमिका और क्षमता है। इस संबंध में महिला समूहों के योगदान के महत्व और पहचान को ध्यान में रखते हुए, ऐसी कुछ महिला समूहों के प्रयासों को उजागर करने और अन्य महिला साथियों को प्रेरित करने के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया था। इसमें एसएचजी, एफपीओ, डब्ल्यूएफएसजी, एनजीओ और महिला किसानों के विभिन्न समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाली 330 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत उद्घाटन सत्र से हुई। डॉ. विनीता कुमारी, उप निदेशक (लिंग अध्ययन) ने कार्यक्रम के व्यक्तियों और मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों की महिला प्रतिभागियों का स्वागत किया। के.एस. नेताम संयुक्त निदेशक कृषि, किसान कल्याण एवं कृषि विकास निदेशालय, भोपाल, मध्य प्रदेश ने इस अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित किया और खाना पकाने की विभिन्न तकनीकों पर ध्यान केंद्रित किया, जो पोषक तत्वों के नुकसान को सुरक्षित करने में सहायक हैं।

डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा, निदेशक विस्तार जेएनकेवीवी, जबलपुर उन्होंने भी प्रतिभागियों को संबोधित किया और पोषण सुरक्षा पर जोर दिया। प्रोफेसर प्रमोद कुमार मिश्रा, जेएनकेवीवी, जबलपुर के कुलपति ने अपने संबोधन में घरेलू पोषण में लिंग अंतर पर प्रकाश डाला।

मिलेट्स के उत्पादन एवं प्र-संस्करण से महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला

भोपाल। अंतर्राष्ट्रीय पोषक अनाज (मिलेट्स) वर्ष में जी-20 समूह देशों के सम्मेलन की अध्यक्षता भारत द्वारा की जा रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में मिलेट्स के उत्पादन एवं प्र-संस्करण से महिला सशक्तिकरण पर दो दिवसीय कार्यशाला केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान भोपाल में हई। कार्यशाला के पहले दिन महिलाओं की सशक्त सहभागिता पर चर्चा हुई। विभिन्न मिलेट्स उत्पादन एवं प्र-संस्करण यंत्रों के साथ महिला कृषकों द्वारा विकसित और विपणन किये जा रहे उत्पादों की प्रदर्शनी आकर्षण का केन्द्र रही। शुभारंभ-सत्र में केन्द्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान के निदेशक डॉ. सी.आर. मेहता ने बताया कि विकसित संस्करण यंत्रों एवं संस्थान के मूल्य संवर्धित उत्पादों में महिला कृषकों की मिलेट्स प्र-संस्करण में अधिक से अधिक सहभागिता बढ़ेगी। मुख्य अतिथि संचालक कृषि अभियांत्रिकी मध्यप्रदेश ई. राजीव चौधरी ने शासन द्वारा कृषि एवं खाद्य प्रौद्योगिकी में मिलेट्स प्र-संस्करण के क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं एवं उनसे प्राप्त लाभों के संबंध में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि शारीरिक क्षमता संवर्धन एवं रोग मुक्ति के लिये मिलेट्स जरूरी है। केन्द्रीय कृषि महिला संस्थान भुवनेश्वर की निदेशक डॉ. मृदुला देवी ने बताया कि मिलेट्स प्रौद्योगिकी पर शोध एवं इसके निरंतर प्रसार से महिला कृषकों की आय में सतत वृद्धि के साथ स्वास्थ्य लाभ भी होगा।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)